आव्रजन तथा सामाजिक गतिशीलता की बाधायें

डॉ. चन्द्रकांति देवी

आव्रजन और सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन विकास और परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में दिखलाया गया है, जो नगरीय समाजशास्त्र की उंचाइयों को छूने का प्रयास करता है। समसामयिक और स्थानीय विकृत मनोभाव से उत्पन्न चिंतन आव्रजन और सामाजिक गतिशीलता के मार्ग में चुनौती के रूप में उभर रहे हैं। यह संकेत पूर्ववर्ती शोध अध्ययन तथा व्यक्तिगत अध्ययन से प्राप्त होता है।

समूह में नकारात्मक संदर्भ समूह की भावना में वृद्धि देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति से अलगाव, बिखराव, संरचनात्मक अस्थिरता का पैदा होना स्वाभाविक है। यह अस्थिरता भारतीय अखण्डता के लिये खतरा और एक चुनौती बन सकती है।